# उषा प्रियंवदा की कहानियों में चित्रित नारी का सेवक–सेव्य भाव

माया रानी

सुपुत्री श्री विनोद कुमार

गांव– कैंरावाली डॉ.माखोसरानी

जिला–सिरसा। 125055

उषा प्रियंवदा की प्रमुख कहानी 'वापसी' में सास–बहू के संबंधों का वास्तविक चित्रण बड़ी ही मुखरता से किया गया है कि किस प्रकार सास–बहू के संबंधों पर ही घर में सुख–शांति निर्भर करती है, क्योंकि अगर घर चलने वाले लोगों में ही मतभेद होगा, तो घर की व्यवस्था अव्यवस्था में बदल जाएगी और यही घरेलू वातावरण को कमजोर बनाती है। हिंदी साहित्य की लगभग सभी विधाओं में सेवक– सेव्य नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है। सेवक– सेव्य नारी के विभिन्न रूपों में बेटी के रूप का चित्रांकन प्रत्येक कहानी, कविता, उपन्यास आदि में सजीव रूप में पाया जाता है। कहीं वह पिता के आदेश का पालन करती है तो कहीं वह विमुख दिखाई पड़ती है। कहीं–कहीं उसे परिवार के भरण पोषण के लिए कार्य भी करना पड़ता है।

सेवक सेवा भाव को भक्ति के क्षेत्र में मोक्ष प्राप्ति के लिए अनिवार्य माना गया है। परंतु कर्म लोक में दास प्रथा की परंपरा नई नहीं है। हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं में सेवक– सेव्य नारी के विभिन्न रूपों का वर्णन किया गया है, जिसमें दासी का स्वरूप भी एक प्रमुख स्थान रखता है। सेवक– सेव्य नारी का यह रूप शोषण का प्रतीक है, क्योंकि किसी के घर में कोई खुशी से कार्य नहीं करता। मजबूरियां करवाती हैं, लेकिन यह मजबूरी शोषण का रूप ले लेती है। प्राचीन समय से ही सेवक– सेव्य नारी को शोषित और पद्लित माना जाता रहा है। उषा प्रियंवदा ने इस गौण पात्र की परिस्थितियों को भी अपनी कहानियों का विषय बनाया है, ताकि सेवक– सेव्य नारी के प्रत्येक स्वरूप की व्याख्या प्रस्तुत की जा सके और सेवक– सेव्य नारी के कोमल हृदय में छुपे दर्द को मुखर भाव से प्रस्तुत किया जा सके।

"गुलबिया का जाना भी कौमुदी को उतना ही खरा जितना कि राजेश्वर को ठाकुर का। दूसरी नौकरानी उसे भी मिल गई, मगर वह बिल्कुल फूहड़ थी। फिर कौमुदी के मिले–जुले अतिथियों को देख उसके आश्चर्य की सीमा न रही। पांच पुरुष और दो स्त्रियां, पर्दे के पीछे झौंककर उसने

बेतकल्लुफी का वह वातावरण देखा और जब कौमुदी अंदर उसे चाय बनाने को कहने आई तो उसने विशेष अभिप्राय भरी दृष्टि से उसे देखा। कौमुदी घुटकर रह गई, मगर कुछ मिनट बाद नौकरानी ने बढ़िया सेट की चायदानी के ढक्कन के तीन टुकड़े कर दिए तो क्रोध से लाल कौमुदी उंगली से बाहर जाने का रास्ता ही दिखा सकी। नौकरानी इतनी विस्मित हुई कि अवाक् हो दिखाए हुए रास्ते से चली गई। जाने के बाद जब किवाड़ अंदर से एक क्रोधित भड़ से बंद कर लिए गए तब उसने जाना कि वह सचमुच बर्खास्त कर दी गई है। बंद किवाड़ों से उसने कहा, वाह रे नखरे! और अपनी राह चली गई।"[1]

उपरोक्त उदाहरण से भारतीय समाज में नौकरानियों की व्यथा को समझा जा सकता है कि किस प्रकार उनका शोषण किया जाता है। गाली गलौच किया जाता है। घर के सदस्य से कोई नुकसान हो जाए तो चल जाता है, लेकिन अगर वही नुकसान नौकरानी से हो जाए तो या तो उसकी पगार काट ली जाती है या उसे नौकरी से निकाल दिया जाता है। यह भारतीय समाज में एक साधारण सी बात है।

सेवक– सेव्य नारी अपने संपूर्ण जीवन में अनेक प्रकार की भूमिकाओं का निर्वाह करना पड़ता है। एक लड़की पैदा होते ही रिश्तों के बंधन में बंधती है तथा अंत तक रिश्तों की जकड़न उसे जकड़े रखती है। वह कभी भी अपने आप को स्वतंत्र महसूस नहीं करती।

बहन के रूप में भी उषा प्रियंवदा ने सेवक– सेव्य नारी विमर्श पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं कि किस प्रकार की परिस्थितियों का सामना उसे करना पड़ता है। घर में अगर एक लड़का हो तो लड़की की सभी ख्वाहिशों को दबा दिया जाता है और अगर कोई लड़कियां हो तो सब को बोझ समझा जाता है। उनकी उपेक्षा की जाती है।

"सुबोध कुछ तीखी–सी बात कहते–कहते रुक गया। कई साल में घिसट–घिसटकर बी.ए.एल. टी. कर लेने और मास्टरनी बन जाने से ही जैसे वृंदा का मेज पर हक हो गया हो! कोई आध्यापिका होने से ही पुस्तकों का प्रेमी नहीं हो जाता। सुबोध की उस मेज पर अब जुड़े के कांटे, नेल–पॉलिश की शीशी और गर्द–भरी किताबें पड़ी रहती थीं और फिर कुछ दिनों बाद मां ने कहा, वृंदा को रोज स्कूल जाने में देर हो जाती है। अपनी अलार्म घड़ी दे दो, सुबोध।"[2]

स्पष्ट है कि वर्तमान समय में स्त्री पर एक ओर कर्तव्य बढ़ गया है। अपने परिवार का पालन

[1] उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.32

[2] . उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं.32

पोषण करना जिस घर में कोई पुरुष कार्य ना करता हो वहं पर सेवक– सेव्य नारी को घर से बाहर निकलाकर पारिवारिक परंपरा का त्याग करना पड़ता है तथा अपनी खुशियों का भी।[3] विभिन्न पारिवारिक चरित्रों के अलावा सेवक– सेव्य नारी का एक चरित्र ऐसा भी है, जिसे ज्यादातर लोग पसंद नहीं करते वह है प्रेमिका का स्वरूप। प्रेमिका के रूप में भी उषा प्रियंवदा ने सेवक– सेव्य नारी चरित्र को मुखरता प्रदान की है। उनके अनुसार पुरुष प्रधान समाज में सेवक– सेव्य नारी को अपने हृदय की बात सुनकर उस पर चलने का हक है।

" रात की रानी के तीनों पेड़ फूलों के बोझ से झुके हुए थे, सुगंध हवा के हर झोंकें के साथ आती और हवा राजी के ढीले बालों में उंगलियां फेरने लगती। राजी अपने चुटीले के फुंदने से रेशमी काले धागे खींचने लगी और आनंद ने थोड़ा पास सरककर कहा, "और सुनाओ राजी, तुम कैसी हो। दिन में कितनी बार मेरी याद करती थी?" मास्टर साहब चले गए, राजी सोच उठी, वह तो उनसे यह कहने आई थी कि मास्टर साहब, चाहे कोई कुछ कहे, मेरे लिए आप उतने ही आदर के पात्र हैं। जीवन की राह पर चलते हुए यदि कोई राही किसी पेड़ की छांह में खड़ा हो जाए, तो मैं उसे बुरा नहीं समझती क्योंकि मैंने जाना है कि सुख क्या है...।"[4]

इन उदाहरणों से प्रेमिका के रूप में सेवक– सेव्य नारी के विचारों से अवगत करवाने का प्रयास किया गया है कि जिस प्रकार पुरुष प्रेम करने का हकदार है, स्त्री उस प्रेम को पाने की हकदार है। बशर्ते की उसमें कुटिलता, छल ना हो, निश्छल प्रेम की छांव सभी को आकर्षित करती है, लेकिन वासना केवल दानव को मानव को नहीं।

पुरुष प्रधान समाज में सेवक– सेव्य नारी की वर्तमान स्थिति में काफी सुधार आया है। पहले सेवक– सेव्य नारी को चारदीवारी से बाहर कदम रखने की इजाजत नहीं दी जाती थी, लेकिन वर्तमान समय में सेवक– सेव्य नारी ने अपनी आजादी और स्वतंत्रता को जीना सीख लिया है। प्रभा खेतान के अनुसार सेवक– सेव्य नारी की स्वतंत्रता उसके पर्स से शुरू होती है, वे सेवक– सेव्य नारी की असली आजादी आर्थिक आजादी को ही स्वीकार करती है। उसी प्रकार उषा प्रियंवदा ने सेवक– सेव्य नारी को स्वतंत्र रूप प्रदान करते हुए उसे आत्मनिर्भर बनने की ओर प्रेरित किया है।

"कौमुदी उन आधुनिक युवतियों में थी, जो पुरुषों से शत–प्रतिशत समानता का दावा करती है। यूनिवर्सिटी से एम.ए. और एक प्रभावशाली संबंधों के द्वारा पांच सौ रुपए महीने की सरकारी

[3] उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.70

[4]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.71

नौकरी पा, अब वह माता–पिता से दूर अकेली रहती थी। अपने छोटे से बंगले को उसने बड़े श्रम और घंटों विचार करने के बाद सजाया था। उसकी बैठक और शयन कक्ष किसी अंग्रेजी मैगजीन के होम डेकोरेटिंग के अंतर्गत दिए गए कमरों के चित्रों के आधार पर सजाए गए थे।"[5]

"मां ने आहत और भर्त्सनापूर्ण दृष्टि से उसे देखकर कहा, उसके पास बचता ही क्या है। तुम खर्च करते होते तो जानते।"

"नहीं, मुझे क्या पता! हमेशा से तो वृंदा ही घर का खर्च चलाती आई है। मैं तो बेकार हूं, निठल्ला। और झुंझलाकर सुबोध ने घड़ी उसे दे दी।"[6]

"सबसे अधिक आश्चर्य तो उसे वृंदा पर था। अक्सर वह सोच उठता कि यह वही वृंदा है, जो उसके आगे–पीछे घूमा करती थी, उसके सारे काम दौड़–दौड़कर किया करती थी! जब उसने चाय मांगी, वृंदा ने चाय तैयार कर दी। और जब? एक रात जरा देर से आने पर उसने सुना, वृंदा बिगड़कर मां से कह रही थी, काम न धंधा, तब भी दादा से यह नहीं होता कि ठीक वक्त पर खाना खा लें। तुम कब तक जाड़े में बैठोगी, मां? उठाकर रख दो, अपने आप खा लेंगे।"[7]

उपरोक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट हो जाता है कि वर्तमान समय मेंऔर पुरुषों के कंधे से कंधा मिलाकर चल रही वह घर के कार्य ही नहीं करती, बल्कि आजीविका चलाने के लिए घर से बाहर निकलकर कार्य भी करती है।

उषा प्रियंवदा ने अपनी कहानियों के माध्यम से सेवक– सेव्य नारी के आत्मनिर्भर के स्वरूप को उजागर किया है कि किस प्रकार वर्तमान समय में सेवक– सेव्य नारी ने अपने लिए एक अलग स्थान बनाया है तथा संसार के प्रत्येक कार्य में अपनी भूमिका को आवश्यक बनाया है।

सेवक– सेव्य नारी हृदय से अत्यधिक कोमल और स्नेहशील होती है। सेवक– सेव्य नारी की अपनी इच्छाएं, आकांक्षाएं, कल्पनाएं होती है। जिनके पूरा होने की आस लिए वह अपने आपको सभी के प्रति समर्पित करती है। चाहे माता–पिता, भाई–बहन, पति, सास, ससुर या अपने बच्चे सभी के लिए इस आशा से कार्य करती है कि कोई उसकी व्यथा को समझे तथा उसकी मानसिकता के अनुरूप उसकी खुशी के लिए कार्य करें। यह स्थिति कहीं–कहीं पर तो पूरी हो जाती है, लेकिन कहीं उसी इच्छा अभिलाषा अधूरी भी रह जाती है।

---

[5]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.29

[6]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं.55

[7] उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.10

"और उस क्षण परमेश्वरी को लगा कि जब जीवन में उसे कुछ और नहीं चाहिए। उसने आसमान छू लिया है। पुलकित कालिंदी और आने वाले शिशु की प्रतीक यह गाड़ी, अब कुछ दिन बाद इसमें लेटा नन्हा–मुन्ना घर में परिवर्तन ले आएगा। उसी की आवश्यकता पर दोनों की नई चर्चा बनेगी। फिर बैठना सीखकर इसमें से झांका करेगा। सारे घर में उसकी हंसी, उसकी किलकारियां प्रतिध्वनित हुआ करेंगी।

और गाड़ी का हैंडिल पकड़े कालिंदी सोच रही थी, अब इसमें नाप की गद्दियां सीऊंगी, छोटे–छोटे तकियों पर रंग–बिरंगे फूल बनाऊंगी। उसकी आंखें परमेश्वरी की आंखों से मिलीं और दोनों अपने–अपने सपनों की अमूल्य निधि को संजोये मुस्कुरा दिए।

छोटा सा घर था, सीमित आय, पर कालिंदी वहां की रानी थी। काम–धंधा समाप्त कर लेट जाती और कभी–कभी कुछ करते–करते भी हाथ रुक जाते और एक गोल–सा चेहरा आंखों के आगे जा जाता, उसकी पीठ पर भार देकर ठुनकता हुआ, उसके हर काम में विघ्न डालता हुआ। जितनी बार कमरे में जाती एक नजर गाड़ी पर जरूर डाल लेती। उसके दिन एक मधुर, उत्सुक आशा में बीतते जा रहे थे।"[8]

इन पंक्तियों में सेवक– सेव्य नारी मन की अभिलाषा और इच्छा को भली–भांति समझा जा सकता है कि किस प्रकार सेवक– सेव्य नारी अपनी इच्छाओं के पूरा होने की आस से ही खुश हो जाती है। एक सेवक– सेव्य नारी के लिए मां बनना दुनिया की सबसे बड़ी खुशियों का अुनपम उपहार होता है। वह मन ही मन तरंगित होती रहती है तथा आने वाले बच्चे के लिए विभिन्न प्रकार की कल्पनाएं उसके जीवन को नवसृजित कर देती है।

"फिर आने वाला शिशु... पर उन सबके बावजूद उल्लास की एक नन्हीं–सी हिलोर उठती और उसके मनप्राणों का तरंगित कर जाती। और जब मां ने उसके पास उसके नवजात शिशु को लिटाया तो कालिंदी सब कुछ भूल गई,सारी पीड़ा, सारी चिंताएं, दिल के ऊपर जमीं हुई गहरी काली काई, उसके एक कोमल स्पर्श से न जाने कहां तिरोहित हो गई। उसने धीरे से बच्चे के काले बालों को उंगली से छुआ और उसकी आंखें देखकर पास बैठी बहन को लगा जैसे स्वच्छ जल पर चांद की किरणें फिसल गई हों। बच्चा निवाड़ के पुराने पालने में लेटा रहता था। कालिंदी को लगता कि अगर गाड़ी होती तो कैसा अच्छा रहता। वह भी हैंडिल में एक रंग–बिरंगा खिलौना लगा देती और

[8]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'मेरी कहानियां' में पृष्ठ नं.55

बच्चा अपनी काली–काली पुतलियों से उसे देखता रहता।"[9]

सेवक– सेव्य नारी के मातृत्व मन को इन पंक्तियों के माध्यम से व्यक्त किया गया है कि किस प्रकार उसका सारा संसार उसके बच्चे तक सिमट कर रह जाता है। उसी से उसकी खुशियां और गम जुड़े रहते हैं।

सेवक– सेव्य नारी हृदय काफी कोमल तो होता है कि लेकिन वह अगर से पुरुष जितनी कठोर और मजबूत नहीं होती, इसलिए उसके एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो उसको समझ सके तथा उसकी भावनाओं की कद्र कर सके। 'मोहबंध' कहानी में उषा प्रियंवदा ने अचला के मन की व्यथा को स्पष्ट किया है।

"तुम्हारे लिए देवेंद्र उपयुक्त नहीं था। तुम्हें चाहिए एक ऐसा पुरुष, जो तुम्हें समझ सके, तुम्हारी कमजोरी को अपना बल दे। तुम्हारे शब्दों में, तुम्हें प्राणदान दे। जब तुम ऐसे व्यक्ति से मिलोगी, तो तुम अपने आप उसे पहचान लोगी। तुम्हारे यह बदलते हुए मूड, सिर–दर्द, सब यों, चुटकी बजाते हुए गायब हो जाएंगे। अच्छा, हटाओ इन सब बातों को। आज पिकनिक पर चलोगी?"[10]

सेवक– सेव्य नारी अथाह शक्ति का भंडार है अगर वह चाहे तो किसी को भी अपने वश में कर सकती है बस आवश्यकता है विश्वास, शक्ति और धैर्य की। यही वह गुण है जो सेवक– सेव्य नारी को पुरुष से श्रेष्ठ बनाती है, निम्न पंक्तियों में कौमुदी के इसी स्वरूप का वर्णन 'जाले' कहानी के माध्यम से उषा प्रियंवदा ने किया है।

"राजेश्वर कौमुदी के लिए एक भारी चुनौती बनकर आए थे। उसकी पहचान के लोगों से भिन्न उसके अस्तित्व से अपरिचित, कौमुदी को अपने पर गहरा अटल विश्वास था। वह सोचती थी कि अवसर आने पर वह राजेश्वर को भी झुका सकती है। वह उसके सामने अशक्त–दुर्बल हो उठेंगे, और याचक बन उसकी कृपा दृष्टि चाहेंगे। पर अब उसने जाना कि उसके बंधन इतने दृढ़ न थे और वह पराजिता, खंडिता, दलिता रह गई थी, छोटे बच्चे की तरह सुबकते हुए कौमुदी ने सोचा कि उसका जीवन कितना खोखला, कितना निःसार है। पहली बार उसे अपने पर करुणा और अपरिचित स्त्रियों से ईर्ष्या हुई। वे अपनी संकुचित परिधि में रानी थीं। उन्हें अपने जीने के लिए श्रम नहीं

[9] उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.36

[10]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.44

करना पड़ता था। उनका जीवन पति और बच्चों के स्नेह से सरस था।"[11]

"बड़ी हसरत से भाभी ने कहा, अकेले रहने में तो यह है ही, जो मन आया, कर लिया। शादी से पहले मुझे सिनेमा देखने का बड़ा चाव था, मेरे एक चाचा गेट–कीपर थे, सब मुफ्त में देखते थे, पर अब तो साल–डेढ़–साल से कोई सिनेमा ही नहीं देखा। मुन्ना छोटा है, घर में कोई है नहीं। छोड़े भी किस पर? कौन–सी फिल्म देखी आपने?"[2]

प्रस्तुत उदाहरणों में सेवक– सेव्य नारी मन की व्यथा का चित्रण किया गया है कि शादी से पहले तथा बाद की स्थिति का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया है। जिस प्रकार की आजादी सेवक–सेव्य नारी के लिए शादी से पहले होती है, वैसी बाद में नहीं रहती। शादी से पहले वह अपनी मर्जी से कहीं भी आ जा सकती है, लेकिन शादी के बाद अनेक प्रकार की जिम्मेदारियां उसको अपने मन की इच्छाओं को पूरा करने में रुकावट पैदा करती है।

कभी–कभी शादी के बाद ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हो जाती है कि लड़की का पति अपनी पत्नी की मानसिक स्थिति को समझ नहीं पाता। ऐसी स्थिति में वैवाहिक जीवन निरस और संवेदन शून्य हो जाता है। दोनों की उपस्थिति में घर ना के बराबर रह जाती है। ऐसे में स्त्री के मन में कई ख्याल उमड़ते हैं वह अपने सपनों को टटोलने का प्रयास करती है, लेकिन वहां सपनों की दुनिया खत्म हो जाती है। जैसा कि निम्न पंक्तियों में दर्शाया गया है।

"आनंद ने उकताकर कहा, छोड़ो भी..." पर राजी अकसर सोच उठती कि मास्टर साहब सचमुच रेगिस्तान–सा शून्य, तप्त, रसहीन जीवन बिताते हैं। पढ़ा आए, पका–खा लिया और रात–भर कराहते रहे। जीवन तो राजी सा होना चाहिए, सुख का सागर उसके चरण भिगो–भिगो कर उमड़ता रहता है, उस पर स्नेह और अनुराग की वर्षा होती रहती है। आनंद, अम्मा, पापा, किरन, हरखू, मास्टर साहब, सभी उसे चाहते हैं, कभी एक कड़ा शब्द नहीं सुना, कभी तीक्ष्ण दृष्टि नहीं सही। राजी ने एक लंबी सांस ली, उन सब अभागों के लिए जो स्नेह के भूखे हैं।"[12]

निष्कर्षः

उषा प्रियंवदा ने सेवक– सेव्य नारी हृदय की तस्वीर प्रस्तुत करने का प्रयास किया है कि किस प्रकार सेवक– सेव्य नारी अपने आने वाले जीवन की कामना करके पुलकित होती रहती है, लेकिन परिस्थितियां अनुकूल न होने पर उसके सपनों का संसार चूर–चूर हो जाता है तथा उसके जीवन में

[11]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.69

[12]. उषा प्रियंवदा द्वारा रचित 'जिंदगी और गुलाब के फूल' में पृष्ठ नं.71

निरसता और संवेदनहीनता आ जाती है। इसलिए पुरुष को सेवक– सेव्य नारी मन की समझ होनी चाहिए, ताकि सेवक– सेव्य नारी की इच्छाओं को पूरा करके पारिवारिक जीवन को खुशहाल बनाया जा सके। उषा प्रियंवदा की कहानियों के माध्यम से सेवक– सेव्य नारी विमर्ष को प्रस्तुत करने का सार्थक प्रयास इस अध्याय में किया गया है। सेवक– सेव्य नारी के प्रत्येक स्वरूप का चित्रण बड़ी ही मुखरता एवं सजीवता से किया गया है। सेवक– सेव्य नारी के प्रत्येक रूप माता, बहन, बेटी, सास, बहू आदि सभी भूमिकाओं का निर्वाह सार्थक रूप में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही सेवक– सेव्य नारी की कर्तव्य भावना, निष्ठा, सेवक– सेव्य नारी मन, पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव तथा सेवक– सेव्य नारी के अबला तथा सबला रूप का विस्तार से वर्णन किया गया है।